सुदर्शनमेरु
जिनालय विधान

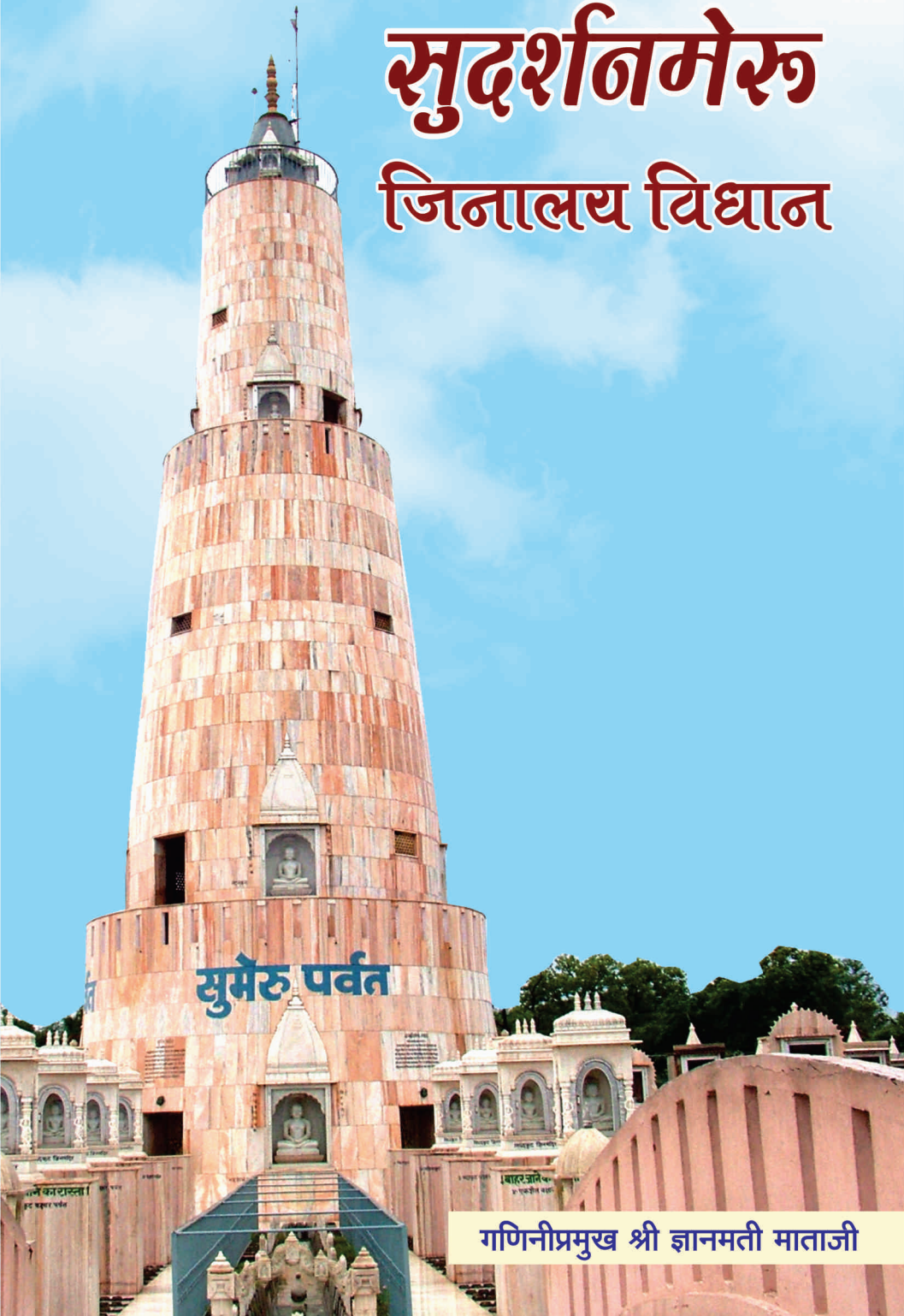

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

भगवान ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग-इलाहाबाद में निर्मित भव्य कैलाशपर्वत

गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ माधोराजपुरा (जयपुर) राज.

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 515
ISBN-978-93-87891-38-8

सुदर्शन मेरु जिनालय विधान

–रचयित्री–

भारतगौरव गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

दिव्यशक्ति, चारित्रचन्द्रिका परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में निर्मित सुदर्शनमेरु पर्वत के 42वें प्रतिष्ठापना दिवस (वैशाख शु. सप्तमी, वी. नि. सं. 2546) के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com, rk195057@yahoo.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2546	मूल्य
1100 प्रतियाँ	वैशाख शु. सप्तमी, 30 अप्रैल 2020	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादक:-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

-: प्रबंध सम्पादक :-

डॉ. जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

प्रस्तावना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

मेरु सुदर्शनगिरि को मस्तक, नत होकर के प्रणमन कर।
उस पर स्थित सोलह जिनगृह, सब गृह में प्रतिमा मनहर।।
उन सब जिनगृह जिनप्रतिमा को, त्रय शुद्धी से वंदूँ मैं।
भक्तिभाव से नितप्रति प्रणमूँ, शिवसुख सिद्धि हेतु मैं।।

मध्यलोक में असंख्यातों द्वीप समुद्र हैं उनमें सबसे प्रथम द्वीप जम्बूद्वीप है। जम्बूद्वीप के बीचों बीच में सुदर्शन मेरु पर्वत है, जो कि 1 लाख 40 योजन ऊँचा है। भरतक्षेत्र से 20 करोड़ मील की दूरी पर है। जहाँ पर वर्तमान में चारण ऋद्धिधारी मुनि, विद्याधर आदि ही जाकर वन्दना करते हैं।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से निर्मित जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में 101 फुट ऊँचा सुमेरु पर्वत है। जिसमें भद्रसालवन, नंदनवन, सौमनसवन एवं पाण्डुकवन ऐसे 4 वन हैं। जिनकी चारों दिशाओं में 1-1 अकृत्रिम जिनमंदिर, ऐसे 16 मंदिर हैं। वर्तमान के 24 तीर्थंकर के जन्मकल्याणक के अवसर पर पूज्य माताजी सुमेरुपर्वत की पाण्डुकशिला पर प्रत्येक तीर्थंकर का पंचामृत अभिषेक एवं 108 कलशों से जन्माभिषेक करवाती हैं।

सन् 1979 में वैशाख शु. सप्तमी के दिन इस सुमेरुपर्वत का एवं इनमें विराजमान 16 भगवन्तों का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सानंद सम्पन्न हुआ था। अतः इस वर्ष सन् 2020 में वैशाख शु. सप्तमी के दिन सुमेरु पर्वत के 42वें प्रतिष्ठापना दिवस पर माताजी ने सुमेरु के 16 भगवन्तों का पंचामृत अभिषेक कराया एवं तीन दिन पहले सुदर्शन मेरु जिनालय विधान तैयार कर दिया, जिसे भक्तों ने अभिषेक के बाद सुमेरु के पास बैठकर किया।

इस विधान में पूज्य माताजी ने सर्वप्रथम संस्कृत में सुदर्शनमेरु भक्ति एवं पद्य में सुमेरु वंदना दी, जिसे पढ़कर सुमेरु के बारे में पूर्व जानकारी एवं वंदना हो जाती है। इसके बाद सुदर्शन मेरु पूजा है फिर सुदर्शन मेरु के भद्रसाल वन जिनालय पूजा, 4 अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य है इसी तरह नंदनवन, सौमनस वन एवं पाण्डुकवन के जिनालय की पूजा एवं 4-4 अर्घ्य, 1-1 पूर्णार्घ्य हैं। पुनः पाण्डुक आदि चार दिशाओं के 4 अर्घ्य एवं 1 पूर्णार्घ्य है। फिर जयमाला एवं प्रशस्ति दी है। मात्र 32 पेज का छोटा सा विधान गागर में सागर के समान है। इस विधान को करने से सुमेरु की वंदना एवं अकृत्रिम मंदिरों की वंदना का महान पुण्य प्राप्त होता है।

इस विधान में कुल 5 पूजा, 20 अर्घ्य, 6 पूर्णार्घ्य एवं 1 जयमाला है। इसके बाद विधान की प्रशस्ति, आरती एवं सुमेरु रचना के भजन दिए हैं।

यह विधान करने वाले, कराने वाले सभी के लिए मंगलकारी हो, यही मंगलभावना है एवं परमोपकारी पूज्य माताजी के श्रीचरणों में कोटि-कोटि नमन।

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृ. संख्या
1. सुदर्शनमेरु भक्ति	5
2. सुमेरु वंदना	6
3. सुदर्शन मेरु पूजा	8
4. सुदर्शनमेरु भद्रसाल वन जिनालय पूजा	10
5. सुदर्शनमेरु नन्दनवन जिनालय पूजा	14
6. सुदर्शनमेरु सौमनस वन जिनालय पूजा	17
7. सुदर्शनमेरु पाण्डुक वन जिनालय पूजा	21
8. पाण्डुक आदि चार शिलाओं के अर्घ्य	24
9. प्रशस्ति	28
10. आरती	29
11. भजन	30-36

मण्डल का नक्शा

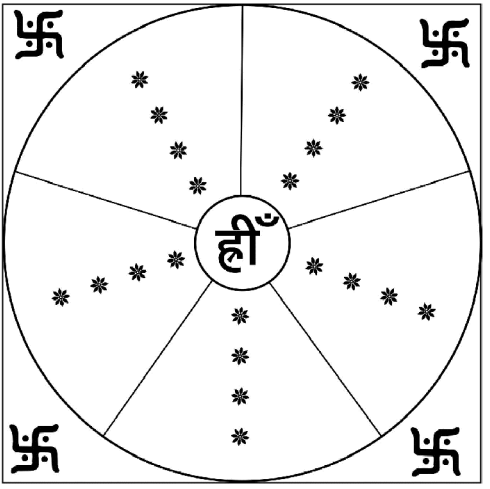

कुल-
5 पूजा
20 अर्घ्य
6 पूर्णार्घ्य
1 जयमाला

श्री सुदर्शनमेरु जिनालय विधान

सुदर्शनमेरु भक्ति

(वसंततिलका छंद)

तीर्थंकर - स्नपननीर - पवित्रजातः,
तुङ्गोऽस्ति यस्त्रिभुवने निखिलाद्रितोऽपि।
देवेन्द्र - दानव - नरेन्द्र - खगेन्द्रवंद्यः,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं नमामि।।1।।

यो भद्रसालवन - नंदन - सौमनस्यैः,
भातीह पांडुकवनेन च शाश्वतोऽपि।
चैत्यालयान् प्रतिवनं चतुरो विधत्ते,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं नमामि।।2।।

जन्माभिषेकविधये जिनबालकानाम्,
वंद्याः सदा यतिवरैरपि पांडुकाद्याः।
धत्ते विदिक्षु महनीयशिलाश-चतसृः,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं नमामि।।3।।

योगीश्वराः प्रतिदिनं विहरन्ति यत्र,
शान्त्यैषिणः समरसैक-पिपासवश्च।
ते चारणर्द्धि-सफलं खलु कुर्वतेऽत्र,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं नमामि।।4।।

ये प्रीतितो गिरिवरं सततं नमन्ति,
वंदन्त एव च परोक्षमपीह भक्त्या।
ते प्राप्नुवंति किल 'ज्ञानमतिं' श्रियं हि,
तं श्रीसुदर्शनगिरिं सततं नमामि।।5।।

—अंचलिका—

इच्छामि भंते! सुदंसणमेरु-भत्तिकाओसग्गो कओ तस्सालोचेउं, इमम्हि मज्झलोए जंबूदीवमज्झट्ठिद-सव्वोच्चमंदरसेले भद्दसालणंदणसोमणसपांडुकवणेसु चउचउदिसासु सोलसजिनायदणाणं पांडुवणविदिसासु तित्थयर-ण्हवणपवित्त-पांडु-पहुदिसिलाणं जिण-जिणघरवंदणट्ठ-विहरमाण-चारणरिद्धिजुत्तरिसीणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

सुमेरु वंदना

यह मेरु सुदर्शन त्रिभुवन में, सबसे ऊँचा कहलाता है।
योजन इक लाख कहा ऊँचा, इक सहस नींव में जाता है।।
चालिस योजन चूलिका कही, वैडूर्यमणीमय प्यारी है।
यह भू पर चौड़ा दश हजार, इसकी छवि जग से न्यारी है।।1।।

पृथ्वी पर भद्रशाल वन है, नंदनवन पाँच शतक ऊपर।
इससे साढ़े बासठ हजार, योजन पर सौमनसं सुन्दर।।
इससे ऊपर छत्तिस हजार, योजन जाकर पांडुक वन है।
चारों वन में शुभ चार-चार, जिनमंदिर अतिशय सुन्दर है।।2।।

इकसठ हजार योजन तक गिरि, बहुवर्णमयी बहुरत्नमयी।
ऊपर में पांडुक वन तक है, अतिसुंदर श्रेष्ठ सुवर्णमयी।।
पांडुक वन की विदिशाओं में, वर पांडुक आदि चार शिला।
तीर्थंकर के जन्माभिषेक, से पावन पूज्य हुई विमला।।3।।

ईशान दिशा में शिला कही, जो पांडुक नामा कनकमयी।
हो भरत क्षेत्र के जिनवर का, इस पर अभिषेक अनूपम ही।।
आग्नेय दिशा में शिला कही, जो पांडुकम्बला रजतमयी।
पश्चिम विदेह के जिनवर का, होता अभिषेक सुपुण्यमयी।।4।।

नैऋत दिश में रक्ता नामा, है शिला तपाये स्वर्णसमा।
ऐरावत के तीर्थंकर का, उस पर अभिषेक कहा सुषमा।।
वायव्य दिशा में लाल शिला, जो रक्तकम्बला नाम धरे।
अभिषेक वहाँ पूरब विदेह, तीर्थंकर का इंद्रादि करें।।5।।

ये अर्ध चंद्र आकार शिला, सौ योजन लम्बी मानी हैं।
योजन पचास चौड़ी ऊँची, हैं आठ कहे जिनवाणी है।।
इन मध्य श्रेष्ठ सिंहासन हैं, जो तीर्थंकर के लिए कहे।
द्वय पार्श्व भाग दो भद्रासन, सौधर्म ईशान के लिए रहे।।6।।

जब-जब तीर्थेश जन्मते हैं, इंद्रों के आसन कंपते हैं।
इंद्रों के मुकुट स्वयं झुकते, सब वाद्य स्वयं बज उठते हैं।।
ऐरावत हाथी पर चढ़कर, सौधर्म इन्द्र आ जाता है।
उस समय असंख्यों देवों का, समुदाय उमड़कर आता है।।7।।

इन्द्राणी जिनशिशु को लाकर, सौधर्म इन्द्र को देती है।
तत्क्षण ही स्त्रीलिंग छेद, निज एक ही भव कर लेती है।।
प्रभु को सुमेरु पर ले जाकर, क्षीरोदधि से जल भर लाते।
इक सहस आठ कलशों द्वारा, प्रभु न्हवन करें अति हर्षाते।।8।।

मेरु के सोलह जिनमंदिर, भक्ती से उन दर्शन कीजे।
जिन प्रतिमाओं का वंदन कर, पूजन कर पाप शमन कीजे।।
जिन वचनों से श्रद्धा करके, निज सम्यक् "ज्ञानमती" कीजे।
रत्नत्रय निधि को पा करके, क्रम से जिनगुण संपति लीजे।।9।।

।।इति जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

सुदर्शन मेरु पूजा

अथ स्थापना– शंभु छंद

त्रिभुवन के बीचों बीच कहा, सबसे ऊँचा मंदर पर्वत।
सोलह चैत्यालय हैं इस पर, अकृत्रिम अनुपम अतिशययुत।।
निज समता रस के आस्वादी, ऋषिगण जहाँ विचरण करते हैं।
तीर्थंकर के अभिषव होते, उस गिरि की पूजा करते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि-षोडशचैत्यालयस्थ-सर्वजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि-षोडशचैत्यालयस्थ-सर्वजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि-षोडशचैत्यालयस्थ-सर्वजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथाष्टक– शंभु छंद

समरस सम निर्मल जल लेकर, मन से मेरू पर जा करके।
जिनवर प्रतिमा के चरणों में, भक्ती से जलधारा करके।।
निज साम्य सुधारस पीकर के, भव तृष्णा दाह बुझा पाऊँ।
जिनप्रतिमा सम निज में निज को, निश्चल कर निज सुख पा जाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि-षोडशजिनचैत्यालयस्थ-सर्वजिनप्रतिमाभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन वच सम शीतल चंदन ले, मन से मेरू पर जा करके।
जिनवर प्रतिमा के चरणों में, भक्ती से गंधार्चन करके।।
निज में सहजिक शीतलतामय, आनंद सुधारस को पाऊँ।
जिनप्रतिमासम निज को निज में, निश्चल कर निज सुख पा जाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि-षोडशजिनचैत्यालयस्थ-सर्वजिनप्रतिमाभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण सम उज्ज्वल अक्षत ले, मन से मेरू पर जा करके।
जिनवर प्रतिमा के चरण निकट, भक्ती से पुंज चढ़ा करके।।

निज शुद्ध अखंडित आत्मा के, अगणित गुणमणि को पा जाऊँ।
जिनमूर्ती सम निज में निज को, निश्चल कर निज सुख पा जाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि-षोडशजिनचैत्यालयस्थ-सर्वजिनप्रतिमाभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन यश सम सुरभित पुष्प लिये, मन से मेरू पर जा करके।
जिनवर प्रतिमा के चरणों में, भक्ती से पुष्प चढ़ा करके।।
सौगंध्य सहित निज समयसारमय, स्वात्म स्वभाव सहज पाऊँ।
जिनप्रतिमासम निज में निज को, निश्चल कर निज सुख पा जाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि-षोडशजिनचैत्यालयस्थ-सर्वजिनप्रतिमाभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ भावामृत के पिंड सदृश, नैवेद्य सरस घृतमय लाके।
मन से मेरू पर जाकर के, भक्ती से चरू चढ़ा करके।।
चित पिंड अखंड सुगुण मंडित, पीयूष पिंड निज को पाऊँ।
जिनप्रतिमासम निज में निजको, निश्चल कर निज सुख पा जाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि-षोडशजिनचैत्यालयस्थ-सर्वजिनप्रतिमाभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन केवल सूर्य किरण सदृश, जगमगता दीप जला करके।
मन से मेरू पर जाकर के, भक्ती से प्रभु आरति करके।।
अविभागी अनवधि ज्योतिर्मय, निज परम बोध रवि प्रगटाऊँ।
जिनप्रतिमासम निज में निज को, निश्चल कर शिव सुख पा जाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि-षोडशजिनचैत्यालयस्थ-सर्वजिनप्रतिमाभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन संमिश्रित धूप लिये, मन से मेरू पर जा करके।
कर्मों को दहन करूँ संप्रति, अग्नी में धूप जला करके।।
सब कर्म मलों से रहित शुद्ध, निर्मल निज अक्षय गुण पाऊँ।
जिनप्रतिमासम निज में निज को, निश्चल कर शिव सुख पा जाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि-षोडशजिनचैत्यालयस्थ-सर्वजिनप्रतिमाभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परमभाव सम सुखदायी, उत्तम रस युत फल ले करके।
मन से मेरू पर जा करके, जिन प्रतिमा ढिग अर्पण करके।।
निज परमामृत आह्लादमयी, सुखमय शिवफल को पा जाऊँ।
जिनप्रतिमासम निज में निज को, निश्चल कर शिव सुख पा जाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि-षोडशजिनचैत्यालयस्थ-सर्वजिनप्रतिमाभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन आदिक अर्घ्य लिये, मन से मेरू पर जा करके।
जिनवर प्रतिमा के चरण निकट, भक्ती से अर्घ्य चढ़ा करके।।
सुख सत्ता दर्शन ज्ञानमयी, शुद्धात्म स्वरूप स्वयं पाऊँ।
जिनप्रतिमा सम निज को निज में, निश्चल कर शिव सुख पा जाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि-षोडशजिनचैत्यालयस्थ-सर्वजिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन छवि सम कंचन झारी में, शीतल सरिता जल भर करके।
मन से मेरू पर जा करके, जिन सन्निध जलधारा करके।।
इंद्रिय विषयों पर विगत सहज, स्वाभाविक निज शांती पाऊँ।
जिनमूर्ती सम निज को निज में, निश्चल कर निज सुख पा जाऊँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कुवलय चंपक बेला आदिक, सुरभित कुसुमों को ले करके।
मन से मेरू पर जाकर के, पुष्पांजलि शुभ अर्पण करके।।
सहजात्म समुद्भव गुण सौरभ से, निज को सुरभित कर पाऊँ।
जिनप्रतिमा सम निज को निज में, निश्चल कर निज पद पा जाऊँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

सुदर्शनमेरु भद्रसाल वन जिनालय पूजा

अथ स्थापना–नरेन्द्र छन्द

(चाल– परम परंज्योति.....)

जम्बूद्रुम से लक्षित जम्बू-द्वीप सुसार्थक नामा।
एक लाख योजन विस्तृत सब द्वीपों में परधाना।।

इसके बीचोंबीच नाभिवत मेरू सुदर्शन जानो।
उसके भद्रसाल में जिनगृह आह्वानन विधि ठानो।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूभद्रसालवनजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूभद्रसालवनजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूभद्रसालवनजिनालयस्थजिनबिंबसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

–अथाष्टक–नरेन्द्र छंद–

रेवानदि को तीरथमय जल, पयसम मुनि मनहारी।
जन्म जरा मृति ताप तीन हर, धार करूँ हितकारी।।
सुरगिरि भद्रसाल वन चारों, चैत्यालय सुखकारी।
सुरपति मौलि मणीप्रभ चुंबित, जिन पद धोक हमारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूभद्रसालवनजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा

कंचनद्रव सम कुंकुम केशर, भ्रमर समूह रमे हैं।
जिन पद पंकज चर्चन करते, भववन में न भ्रमें हैं।।सुर.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूभद्रसालवनजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दुग्धसिंधु के फेन सदृश अति अक्षत उज्ज्वल लाये।
अमृत पिंड सदृश पुंजों से जिनपद पूज रचाये।।सुर.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूभद्रसालवनजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही चमेली मल्लि मालती, सुवरण पुष्प मंगाये।
घ्राण नयन प्रिय काम बाण हर, जिनपद पद्म चढ़ाये ।।सुर.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूभद्रसालवनजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी पेड़ा खीर मलाई, पूरणपोली लाये।
क्षुधा रोग निज दूर करन को, जिनवर निकट चढ़ाये।।सुर.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूभद्रसालवनजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमयदीप रतनमय ज्योती, दशदिश तम हरता है।
जिनपद पूजत मोह तिमिर सब, तत्क्षण ही नशता है।।सुर.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूभद्रसालवनजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कालागरु चंदन मलयागिरि, धूप सुगन्धित लेके।
दशदिश सुरभित करूँ धूम से, धूप अगनि में खेके।।सुर.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूभद्रसालवनजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला सेव मोसम्बी, नासपती फल लाये।
घ्राण नयन मन प्रीणन[1] तुम ढिग, शिवफल हेतु चढ़ाये।।सुर.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूभद्रसालवनजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलफल आदिक अर्घ्य संजोकर, उसमें रतन मिलाऊँ।
जिनवर सन्मुख अर्घ्य चढ़ाकर, भवभव भ्रमण मिटाऊँ।।सुर.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरूभद्रसालवनजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

प्रासुक मिष्ट सुगंधजल, क्षीरोदधि सम श्वेत।
जिनपदधारा मैं करूँ, तिहुं जग शांती हेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।।

पारिजात के पुष्प ले, श्री जिन चरण सरोज।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले निजातम सौख्य।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

---

1. सतुष्ट करने

अथ प्रत्येक अर्घ्यं

–दोहा–

सर्वश्रेष्ठ गिरिराज है, मेरु सुदर्शन नाम।
भद्रसाल वन भूमि के, जिनगृह करूँ प्रणाम।।1।।

इति सुदर्शनमेरुभद्रसालवनस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

–वीरछंद–

भद्रसाल वन पृथ्वी तल पर, मेरु के चौतरफ कहा।
पूर्वदिशा में जिन चैत्यालय, सुर नर खग से पूज्य कहा।।
आत्मसुधारस आस्वादी मुनि, दर्शन वंदन नित करते।
अष्ट द्रव्य से पूजन कर भवि, जन्म मरण दुख को हरते।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भद्रसाल के दक्षिण दिश में, कांचन छवि जिनमंदिर है।
रत्नमयी जिनप्रतिमा राजें, अनुपम रूप मनोहर है।।
आत्मसुधारस आस्वादी मुनि, दर्शन वंदन नित करते।
अष्ट द्रव्य से पूजन कर भवि, जन्म मरण दुख को हरते।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भद्रसाल वन पश्चिम दिश में, अकृत्रिम जिनधाम कहा।
भवविजयी जिनवर बिंबों से अद्भुत अतिशय धाम रहा।।
आत्मसुधारस आस्वादी मुनि, दर्शन वंदन नित करते।
अष्ट द्रव्य से पूजन कर भवि, जन्म मरण दुख को हरते।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भद्रसाल के उत्तर दिश में, जिनवर भुवन अतुल शुभ है।
भव्य मुमुक्षू जन नित पूजे, कोटि बार नित प्रणमत हैं।।
आत्मसुधारस आस्वादी मुनि, दर्शन वंदन नित करते।
अष्ट द्रव्य से पूजन कर भवि, जन्म मरण दुख को हरते।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थित-उत्तरदिग्जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-चौबोल-

मेरु सुदर्शन भद्रसाल में, चारों दिश के चार कहे।
त्रिभुवन तिलक जिनेश्वर के गृह, अकृत्रिम अभिराम रहे।।
जल गंधाक्षत पुष्प चरूवर, दीप धूप फल अर्घ्य लिया।
निज शुद्धातम लब्धी हेतू, जिन पद पूरण अर्घ्य दिया।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थितचतुर्जिनालयस्थसर्वजिन-बिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

सुदर्शनमेरु नन्दनवन जिनालय पूजा

अथ स्थापना-सोरठा

मेरु सुदर्शन माहिं, नंदन वन के जिनभवन।
आह्वानन कर आज, मैं पूजों जिनबिंब को ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक-गीताछंद

(चाल-सम्मेदगढ़ गिरनार.....)

पीयूषसम जल लाय हितकर, नाथ पदधारा करूँ।
जर जन्म मृत्यु तापत्रय के, शांति हित आशा धरूँ।।
श्री मेरू कांचनगिरि दुतिय, नंदन वनी के जिनगृहा।
जिन पूजते संसार संभव, चतुर्गति के दुख दहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुंजारते मधुकर सुरभियुत गंध चंदन लायके।
भववन दवानल तापहर, जिनचरण गंध चढ़ायके।।
श्रीमेरू कांचनगिरि द्रुतिय, नंदन वनी के जिनगृहा।
जिन पूजते संसार संभव, चतुर्गति के दुख दहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यःचंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशिकिरण सम उज्ज्वल कमल, अक्षत लिया भर थाल में।
वसु पुण्य पुंज चढ़ाय पूजूँ, हर्ष से नत भाल मैं।।श्री.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्ली बकुल अरविंद पाटल, फूल सुरभित ले लिये।
जिनपाद पंकज पूजते, सब काम शर निष्फल किये।।श्री.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यःपुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्टान्न घृतमय सरस व्यंजन, दिव्य अमृत सम लिया।
जिन पाद पंकज पूज के, क्षुध डाकिनी को वश किया।।श्री.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक शिखा से यज्ञभूमी, में उजाला हो गया।
प्रभु आरती करते तुरत, निज मोहतम सब खो गया।।श्री.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित अगुरु गुरु श्वेत चंदन, धूप धूपायन जले।
बहु गगन में धूमावली, उड़ती करम अरि को दले।।श्री.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दाडिम पनस अंगूर केला, आम्र अमरख लाइये।
मन नयन भावन सत्फलों से, पूज शिवफल पाइये।।श्री.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत आदि ले भर, अर्घ्य कंचन थाल में।
जिन पाद पूजूँ फिर कभी, नहिं फसूँ भ्रम के जाल में।।श्री.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

प्रासुक मिष्ट सुगंध जल, क्षीरोदधि सम श्वेत।
जिनपद धारा मैं करूं, तिहुंजग शांती हेत ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पारिजात के पुष्प ले, श्री जिनचरण सरोज।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले निजातम सौख्य।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

-सोरठा-

जंबूद्वीप महान् ताके मध्य सुमेरु के ।
नंदन वन जिनधाम पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

इति सुदर्शनमेरुनंदनवनस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

-रोला छंद-

मेरु सुदर्शन विषैं, सुभग नंदन वन जानो।
सुरनरगण से पूज्य, पूर्वदिक् जिनगृह मानो।।
जल गंधादि मिलाय, अर्घ्य ले पूजो भाई ।
रोग शोक मिट जाय, मिले निज संपति आई।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थितपूर्वदिग्जिनालयस्थसर्वजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदन वन के मांहि, जिनालय दक्षिण दिश हैं।
नित्य महोत्सव साज, देवगण पूजन रत हैं।।
जल गंधादि मिलाय, अर्घ्य ले पूजो भाई ।
रोग शोक मिट जाय, मिले निज संपति आई।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थितदक्षिणदिग्जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश जिननिलय, मनोहर नंदनवन में।
सुर विद्याधर रहें सतत भक्तीरत जिन में ।।
जल गंधादि मिलाय, अर्घ्य ले पूजो भाई ।
रोग शोक मिट जाय, मिले निज संपति आई।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थितपश्चिमदिग्जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दनवन के उत्तर, जिनमंदिर सुखकारी।
उसमें जिनवर बिंब, दुरितहर मंगलकारी।।
जल गंधादि मिलाय, अर्घ्य ले पूजो भाई ।
रोग शोक मिट जाय, मिले निज संपति आई।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थित-उत्तरदिग्जिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य –दोहा

मेरु सुदर्शन में दिपे, नंदन वन सुखकार।
पूजूं अर्घ्य चढ़ाय के, तिनके जिनगृह चार।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थितचतुर्जिनालयस्थसर्वजिन-बिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

सुदर्शनमेरु सौमनसवन जिनालय पूजा

अथ स्थापना–अडिल्ल छंद

सुरगिरि में वन तृतिय सौमनस शुभ कहा।
ताके चहुंदिश चार जिनालय हैं महा।।

रत्नमयी जिनबिंब उन्हीं में अघ हरें।
आह्वानन कर पूजें हम शिवतिय वरें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टकं-द्रुतविलम्बित छंद

सुरनदी जल निर्मल लाइया, भवहरण जिनपाद चढ़ाइया।
सुरगिरी के वन सौमनस में, जिन निकेतन पूजें नित नमें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभि कुंकुम चंदन लाइके, पद सरोरुह आप चढ़ाय के।
सुरगिरी के वन सौमनस में, जिन निकेतन पूजें नित नमें।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल निष्तुष तंदुल लायके, अमृत पिंड समान चढ़ाय के।
सुरगिरी के वन सौमनस में, जिन निकेतन पूजें नित नमें।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन की माला सुरभित लिये, सुमनसा मनहर तुम अर्पिये।
सुरगिरी के वन सौमनस में, जिन निकेतन पूजें नित नमें।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतमयी पकवान चढ़ाइये, निज क्षुधामय रोग मिटाइये।
सुरगिरी के वन सौमनस में, जिन निकेतन पूजें नित नमें।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल तामस नाशन दीप ये, पद जजत त्रयलोक विलोकिये।
सुरगिरी के वन सौमनस में, जिन निकेतन पूजें नित नमें।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगरु कृष्णागरु वर धूप ले, अगनि में खेते सब अघ जले।
सुरगिरी के वन सौमनस में, जिन निकेतन पूजें नित नमें।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस आम्र अनार भले भले, तुम जजत ही शिवफल को फलें।
सुरगिरी के वन सौमनस में, जिन निकेतन पूजें नित नमें।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल सुचंदन अक्षत आदि से, करत अर्घ्य छुटें जगजाल से।
सुरगिरी के वन सौमनस में, जिन निकेतन पूजें नित नमें।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

प्रासुक मिष्ट सुगन्ध जल, क्षीरोदधि समश्वेत।
जिनपद धारा मैं करूँ, तिहुँ जग शांती हेत ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पारिजात के पुष्प ले, श्री जिनचरण सरोज।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले निजातम सौख्य।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य–सोरठा

कल्पवृक्षसम जान, सुरुगिरि का सौमनस वन।
ताके चउ जिनधाम, पुष्पांजलि कर मैं जजूँ।।1।।

इति सुदर्शनमेरुसौमनसवनस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

–दोहा–

वन सौमनस महान है, मेरु सुदर्शन माहिं।
पूरब दिश में जिनभवन, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाहिं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन सौमनस जिनेश गृह, दक्षिण दिशा मंझार।
वसु विधि अर्घ्य संजोय के, पूजो हो भव पार ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश सौमनस के, स्वर्णमयी जिनधाम।
भक्तिभाव से अर्घ्य ले, पूजो जिनवर धाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तरदिश सौमनस में, श्री जिनभवन महान्।
त्रिभुवनतिलक प्रसिद्ध है, जजूं अर्घ्य ले आन ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थित-उत्तरदिग्जिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

सुरगिरि का सौमनस वन, दिशदिश में जिनगेह।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय के, जजूँ हृदय धर नेह।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थितचतुर्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य परिपुष्पांजलिः।

सुदर्शनमेरु पाण्डुकवन जिनालय पूजा

अथ स्थापना-दोहा

सुरगिरि पर पांडुकवनी, दिश दिश जिनगृह चार।
स्थापन कर पूजहूँ, जिनप्रतिमा सुखकार।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथाष्टक-अडिल्ल छंद

देवसरित को नीर तीर्थ सम लाइये।
पापपंक क्षालन हित नाथ चढ़ाइये।।
कनकदेह सुरपर्वत, वन पांडुक तहां।
कर्मपंक क्षालन हित सुर पूजें वहाँ ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर हरिचंदन घिस लिया।
भव दावानल शांतिहेतु, प्रभु चर्चिया।।कनकदेह.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

साठीं चावल चन्द्रकिरण सम धो लिये।
अमृत पिंड समान पुंज तुम ढिंग किये।।कनकदेह.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पारिजात मंदार कुंद मचकुंद ले।
मधुकर चुंबित जजूँ पाद पंकज भले।।
कनकदेह सुरपर्वत, वन पांडुक तहां।
कर्मपंक क्षालन हित सुर पूजें वहाँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत शक्करमय घेवर फेनी ले घने।
तुम नैवेद्य चढ़ाय क्षुधा डाकिन हने।।कनकदेह.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हेमपात्र में घृत कर्पूर जलाइये।
दीपक से जिनपूज अज्ञान नशाइये।।कनकदेह.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अलि गुंजे चहुँ ओर धूप की गंध तें।
कर्म भगे चहुं ओर पूज पदपद्म तें।।कनकदेह.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रमुक[1] संतरा सेव आम्र फल लाइये।
जिनपद पंकज पूज, मुक्तिफल पाइये।।कनकदेह.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत सुम चरु आदिक अर्घ्य ले।
जिनपद पंकज पूज सकल संपत्ति मिले ।।कनकदेह.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. सुपारी।

–दोहा–

प्रासुक मिष्ट सुगंध जल, क्षीरोदधि समश्वेत।
जिनपद धारा मैं करूँ, तिहुंजग शांती हेत ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पारिजात के पुष्प ले, श्री जिनचरण सरोज।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले निजातम सौख्य।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य –सोरठा

पांडुकवन जिनगेह, सुरतरु सुमन चढ़ायके।
पूजूँ धर वर नेह, फेर न भव वन में भ्रमूँ।।1।।

इति श्रीसुदर्शनमेरुपांडुकवनस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छन्द–

मेरू पर चौथा पांडुकवन, उसके पूरब दिश सुन्दर हैं।
रत्नों की मूर्ती से संयुत, मणिकनकमयी जिनमंदिर हैं।।
जल गंधादिक वसु द्रव्य लिये, नित पूजा करके अर्घ्य करूँ।
संसार जलधि से तिरने को, जिन भक्ती नौका प्राप्त करुँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनपूर्वदिक्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुकवन में दक्षिण दिश का, जिनभवन अनूपम कहलाता।
जो दर्शन वंदन करते हैं, उसको यह अनुपम फलदाता।।
जल गंधादिक वसु द्रव्य लिये, नित पूजा करके अर्घ्य करूँ।
संसार जलधि से तिरने को, जिन भक्ती नौका प्राप्त करुँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनदक्षिणदिक्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुकवन के पश्चिम दिश में, जिन चैत्यालय महिमाशाली।
सुरनर विद्याधर से पूजित, सब ताप हरे गुणमणिमाली।।

जल गंधादिक वसु द्रव्य लिये, नित पूजा करके अर्घ्य करूँ।
संसार जलधि से तिरने को, जिन भक्ती नौका प्राप्त करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनपश्चिमदिक्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुकवन के उत्तर दिश में, शुभ त्रिभुवनतिलक जिनालय है।
नामोच्चारण से पाप दहे, भक्तों के लिये सुखालय है।।
जल गंधादिक वसु द्रव्य लिये, नित पूजा करके अर्घ्य करूँ।
संसार जलधि से तिरने को, जिन भक्ती नौका प्राप्त करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवन-उत्तरदिक्जिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-

श्रीमेरुसुदर्शन पांडुकवन, दिशदिश में जिनमंदिर शोभें।
सब पंचवरणमय रत्नों के, अकृत्रिम भूकायिक शोभें।।
जल गंधादिक वसु द्रव्य लिये, नित पूजा करके अर्घ्य करूँ।
संसार जलधि से तिरने को, जिन भक्ती नौका प्राप्त करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनजिनालयस्थजिनबिंबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

मेरु सुदर्शन के सभी, सोलह जिनवर धाम।
उन सबके जिनबिम्ब को, मैं पूजूँ इत ठाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थसर्वजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः

-पांडुक आदि चार शिलाओं के अर्घ्य-

पांडुक वन में ईशान विदिश, इक पांडुकशिला कहाती है।
सौ योजन लम्बी अरु पचास, योजन विस्तृत मन भाती है।।

ऊँची अठ योजन अर्ध चन्द्र, आकार कनकमय वर्ण धरे।
इस पर ही भरतक्षेत्र के तीर्थंकर का सुर अभिषेक करें।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनईशानदिशिभरतक्षेत्र-उत्पन्नतीर्थंकरजन्माभिषेक-पवित्रपांडुकशिलायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आग्नेय विदिश में रजतमयी, है पांडुकंबला शिला कही।
पश्चिम विदेह तीर्थंकर का, अभिषेक करें सुरपती यहीं।।
इस शिला मध्य सिंहासन पर, तीर्थंकर शिशु को बिठलायें।
आजू बाजू हों इद्र खड़े, अभिषेक करें सब गुण गायें।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवनआग्नेयदिशिपश्चिमविदेहक्षेत्र-तीर्थंकरजन्माभिषेक-पवित्रपांडुकंबलाशिलायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नैऋत्य दिशा में रक्तशिला, कनकाभ कही इसके ऊपर।
ऐरावत के तीर्थंकर का, अभिषेक करें सुरपति मिलकर।।
वनवेदी मंगल द्रव्यों से, बहुशोभित शुद्ध शिलाओं का।
वंदन करते मुनिगण जाकर, मैं पूजूँ भववारिधि नौका।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिपांडुकवननैऋत्यदिशिऐरावतक्षेत्र-तीर्थंकरजन्माभिषेक-पवित्ररक्ताशिलायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायव्य कोण में रक्तकंबला, लालवर्ण की शिला कही।
पूरब विदेह के तीर्थंकर, शिशु का अभिषेक यहीं पर ही।।
चारण ऋद्धिधारी मुनिगण, अभिषेक देखते अधर खड़े।
सौधर्म इन्द्र बहु विभव करें, हम भी पूजें इन चरण पड़े।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ-सुदर्शनमेरुपांडुकवनवायव्यदिशि पूर्वविदेहक्षेत्र-तीर्थंकरजन्माभिषेक-पवित्ररक्तकंबलाशिलायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-दोहा-

चार शिलाओं को जजूँ, मुनिगण से भी वंद्य।
तीर्थंकर अभिषेक कर, पाऊँ सौख्य अनिंद्य।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिसुदर्शनमेरुस्थितचतुःशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

-जाप्य-

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

(9 बार या 108 बार)

जयमाला

-शंभु छंद-

श्रीमेरु सुदर्शन के ऊपर, सोलह चैत्यालय भास रहे।
उसमें क्रमशः वन भद्रसाल, नंदन सौमनसरु पांडुक हैं।।
चारों वन के चारों दिश में, शुभ चार-चार जिनमंदिर हैं।
प्रति जिनमंदिर में जिनप्रतिमाएँ, इकसौ आठ प्रमाण कहें।।1।।

ये इंद्रिय सुख से रहित अतीन्द्रिय, ज्ञान सौख्य संपतिशाली।
सब रागद्वेष विकाररहित, जिनवर प्रतिमा महिमाशाली।।
तनु बीस हजार हाथ ऊँची, पद्मासन मूर्ति सुखद सुन्दर।
प्रभु नासा दृष्टि सौम्य मुद्रा, संस्मित मुखकमल अतुल मनहर।।2।।

यह एक लाख चालिस योजन, ऊँचा शैलेन्द्र सुदर्शन है।
पृथ्वी पर चौड़ा दश हजार, ऊपर में चार हि योजन है।।
भूपर है भद्रसाल कानन, चंपक अशोक तरु आदि सहित।
चारों दिश में जिनभवन चार, उनमें जिनमूर्ति अकृत्रिम नित।।3।।

पृथ्वी से पांच शतक योजन, ऊपर नंदनवन राजे हैं।
स्वात्मैक निरत ऋषिगण गगने-गामी वहाँ निज को ध्याते हैं।।
उससे साढ़े बासठ हजार, योजन ऊपर सौमनस वनी।
सुरगण विद्याधर से पूजित, जिनवर मंदिर हैं अतुल धनी।।4।।

उससे छत्तीस सहस योजन, ऊपर पांडुकवन शोभ रहा।
चारों दिश चार जिनालय से, ध्यानी मुनिगण से राज रहा।।
चारों विदिशाओं में सुन्दर हैं, पांडुक आदिक चार शिला।
तीर्थंकर शिशुओं के अभिषव, महिमोत्सव से हैं वे अमला।।5।।

भू से मेरू इकसठ हजार, योजन तक चित्रित रत्नमयी।
उससे ऊपर कांचन छविमय, चूलिका कही वैडूर्यमयी।।

जिनमंदिर में ध्वज मंगल घट, हैं रत्न कनकमणिमालाएँ।
हैं रत्नजटित सिंहासनादि, अनुपम वैभवयुत मन भाएँ।।6।।

पूजन वंदन दर्शनकर्ता, भविजन को पुण्य प्रदान करें।
ज्ञानी ध्यानी मुनिगण को भी, परमानंदामृत दान करें।।
उनकी मुद्रा को निरख-निरख, पापों का पुंज विनाश करें।
उनकी मुद्रा को ध्या-ध्या कर, परमाह्लादक निज में विचरें।।7।।

जय जय षोडश जिनवर मंदिर, जय जय अकृत्रिम सुखदाता।
जय जय मृत्युञ्जयि जिनवर की, प्रतिमा कल्पद्रुम समदाता।।
जय जय जय सकल विमल केवल, चैतन्यमयी आह्लाद भरें।
वे स्वयं अचेतन होकर भी, चेतन को सिद्धि प्रदान करें।।8।।

मैं भी उनको पूजूँ ध्याऊँ, वंदूँ प्रणमूँ गुणगान करूँ।
जिनसदन अकृत्रिम वंदन कर, निज का भव भ्रमण समाप्त करूँ।।
निज आत्मा में निज आत्मा को, पाकर निज में विश्राम करूँ।
दो केवल 'ज्ञानमती' मुझको, जिससे याचना समाप्त करूँ।।9।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधि-षोडशजिनालयस्थ-सर्वजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

-शेर छंद-

जो मेरु सुदर्शन का, विधान यह करें।
वे आधि व्याधि शोक, दुःख का शमन करें।।
संसार के सम्पूर्ण सौख्य, संपदा भरें।
कैवल्य 'ज्ञानमती' से, निजात्म सुख वरें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

-दोहा-

शांतिनाथ तीर्थेश को, नमूँ अनन्तों बार।
कुंथुनाथ अरनाथ को, नमूँ भक्ति उरधार।।1।।

कुंदकुंद आम्नाय में, गच्छ सरस्वती मान्य।
बलात्कारगण सिद्ध है, उनमें सूरि प्रधान।।2।।

सदी बीसवीं के प्रथम, शांतिसागराचार्य।
उनके पट्टाचार्य थे, वीरसागराचार्य।।3।।

देकर दीक्षा आर्यिका, दिया ज्ञानमती नाम।
गुरुवर कृपा प्रसाद से, सार्थ हुआ कुछ नाम।।4।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, छ्यालिस जगत्प्रसिद्ध।
तृतिया सित वैशाख की, अक्षयतृतिया[1] सिद्ध।।5।।

गिरि सुमेरु विधान यह, किया संकलित पूर्ण।
मेरु सुदर्शनगिरि यहाँ, निर्मित अतिशय पूर्ण।।6।।

शांतिनाथ भगवान का, जब तक तीर्थ महान्।
भक्तजनों का हित करें, तब तक मेरु विधान।।7।।

1. ईसवी सन् 1979 में सुदर्शनमेरु के जिनबिम्बों का वैशाख शु. 7 को पंचकल्याणक हुआ है। अभी उनका 42वाँ प्रतिष्ठापना दिवस आ रहा है। इसी उपलक्ष्य में मैंने यह विधान संकलित किया है।

श्री सुदर्शन मेरू की आरती

तर्ज–मैं तो आरती.....

मैं तो आरती उतारूं रे, मेरू सुदर्शन की,
जय जय जय मेरू गिरी, जय जय जय।।टेक.।।

बड़े सुन्दर हैं जिनबिम्ब, मेरू के मंदिर में।मेरू के.....
चारों दिशा में चार बिम्ब, मेरू के मंदिर में।।मेरू के.....
भक्ति करो घूम-घूम, नृत्य करो झूम-झूम, जीवन सुधारो रे,
हो हो प्यारा-प्यारा जीवन सुधारो रे।।मैं तो आरती.....।।1।।

ऐरावत पर चढ़कर, इन्द्र जाता है मेरू पे।।इसी ही मेरू पे।।
तीर्थंकर का जन्माभिषेक, करता है मेरू पे।। इस ही मेरू पे।।
चार वन हैं शोभ रहे, मुनि भी दर्श कर रहे, आभा निराली है,
हो हो जिनकी आभा निराली है।।मैं तो आरती.....।।2।।

इस मेरू की महिमा अचिंत्य, ग्रंथों में कहते हैं।।ग्रंथों में.....
करे 'चन्दनामती' जो प्रभु भक्ति, सिद्धी को वरते हैं।। सिद्धी को.....
स्वर्णाचल मेरू कहे, अकृत्रिम जिनबिम्ब रहे, रचना है प्यारी रे,
हो हो रचना है प्यारी रे।।मैं तो आरती.....।।3।।

भजन

-आर्यिका चन्दनामती

तेरे हाथों की लकीर बदलेगी, मनोकामना सभी फलेगी,
जरा तू आजमा के देख ले,
मिल जाएगा खोया खजाना-2, तू जम्बूद्वीप आके देख ले।।0।।

मेरु सुदर्शन का सुन्दर नजारा।
इक सौ इक फुट ऊँचा है प्यारा।।
इसमें सोलह जिनमंदिर, सबसे ऊपर पाण्डुकवन,
जरा तू वहाँ जाके देख ले,
मिल जाएगा खोया खजाना-2, तू जम्बूद्वीप आके देख ले।।1।।

प्रभु के जन्माभिषेक से है पावन।
देवेन्द्र दानव नरेन्द्र करें वन्दन।।
विद्याधर वन्दन करते, हम तुम भी नमन उसे करते,
उसे तू प्रत्यक्ष देख ले,
मिल जाएगा खोया खजाना-2, तू जम्बूद्वीप आके देख ले।।2।।

स्वयंसिद्ध वहाँ प्रतिमा विराजीं।
भक्तों की कार्य सिद्धी करने वाली।।
''चन्दनामती'' उस गिरि का, वन्दन परोक्ष में भी करना,
कभी तो प्रत्यक्ष देखना,
मिल जाएगा खोया खजाना-2, तू जम्बूद्वीप आके देख ले।।3।।

भजन

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-ए री छोरी बांगड़ वाली.....

देखो जम्बूद्वीप के अन्दर अतिशय कैसा छाया है। देखो.....

भद्रसाल नन्दन सौमनसं, पाण्डुकवन से पावन है।
चारों वन में चार चार, जिनमंदिर से मनभावन है।।
दुनिया में इक मात्र सुमेरु, सबके मन को भाया है।।देखो....।।1।।

कोई यहाँ मांगे धन सम्पत्ती, कोठी बंगला गाड़ी रे।
मेरु गिरी का वन्दन करके, आश पूर्ण हो जाती रे।।
ज्ञानमती माता के ज्ञान का लाभ सभी ने पाया है।।देखो.....।।2।।

इक सौ छत्तिस सीढ़ी चढ़कर, चारों वन में जाना है।
सोलह जिनवर का वन्दन, ''चन्दनामती'' कर आना है।।
बच्चे बूढ़े सब चढ़ जाते, पुण्य की ऐसी माया है।।देखो....।।3।।

भजन

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-कभी राम बनके.....

जन्म उत्सव का प्रतीक, पाण्डुकशिला पर अभिषेक,
प्रभु का करते सौधर्म इन्द्र मेरु पे।।0।।

जिनबालक का जन्म होता जब जब।
इन्द्र-इन्द्राणी करते न्हवन तब तब।।
क्षीरोदधि से जल लाके, स्वर्ण कलश भराके,
प्रभु का करते अभिषेक इन्द्र मेरु पे।।1।।

मेरु पर्वत के पाण्डुकवन में।
चारों विदिशा में चार पाण्डुकशिला हैं।।
ईशान कोण में, जन्मे भरतक्षेत्र के,
प्रभु का करते अभिषेक इन्द्र मेरु पे।।2।।

यति मुनियों से वंदनीय शिला ये।
जम्बूद्वीप हस्तिनापुर के मेरु पे।।
यह है मेरु सुदर्शन, इसे शत शत है नमन,
प्रभु का करते अभिषेक इन्द्र मेरु पे।।3।।

युग भूलेगा न ज्ञानमती मात को।
वरदानी कृति मेरु गिरिराज को।।
''चन्दनामती'' ये देन, जग को देगी सुख चैन,
प्रभु का करते अभिषेक इन्द्र मेरु पे।।4।।

भजन

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-मेरे देश की धरती सोना उगले.....

मेरे देश की धरती ने अनेक पावन तीर्थों को दिया है,
मेरे देश की धरती.....2।।टेक.।

जहाँ तीनों लोकों का सबसे, ऊँचा सुमेरु पर्वत है खड़ा।..ऊँचा सुमेरुपर्वत.
जहाँ नील गगन के नीचे जम्बूद्वीप जैन भूगोल बना।.....जम्बूद्वीप..
हो.....ओ.....ओ.....
इतिहास की उस पावन धरती ने तीर्थंकर भी दिया है।।मेरे....।।1।।

जिस मेरु गिरि का वंदन करने, योगीगण नित जाते हैं।...योगी.....
समरस व शान्तिपीयूष पिपासु, मुनि वहाँ ध्यान लगाते हैं।।.....मुनि वहाँ.....
हो.....ओ.....ओ.....
चारण ऋद्धीयुत मुनियों ने निज जन्म को सफल किया है।।मेरे.....।।2।।

उस मेरु सुदर्शनगिरि को हम सब, शत-शत वन्दन करते हैं।....शत शत.....
श्री ज्ञानमती माताजी की, निधि का अभिनंदन करते हैं।।.....निधि का.....
हो.....ओ.....ओ.....
''चन्दनामती'' हस्तिनापुरी का कण कण धन्य हुआ है।।
मेरे देश की.....।।3।।

भजन

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-सोनागिरि में सोना.....

जम्बूद्वीप में मेरु सुदर्शन प्यारा है।
हस्तिनापुर में सुन्दर दिखा नजारा है।।
ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली, तभी अखण्ड ज्ञान की ज्योति वहाँ जली।।

जो प्रीतिपूर्वक मेरु गिरि का संस्तवन करते।
वन्दन करें परोक्ष में भी स्मरण करके।।
वे ज्ञानलक्ष्मी को निश्चित ही प्राप्त करते हैं।
गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमति को याद करते हैं।।
उनके ज्ञान व ध्यान का ही फल सारा है।
हस्तिनापुर में सुन्दर दिखा नजारा है।।1।।

जो चीज केवल शास्त्र के अन्दर समाहित थी।
साकार धरती पर हुई वह तिलोयपण्णत्ती।।
दर्शन से उसके लाख उपवासों का फल मिलता।
तब ज्ञान दीपक ''चन्दनामती'' हृदय में जलता।।
कलियुग में प्रभु भक्ति का ही सहारा है।
हस्तिनापुर में सुन्दर दिखा नजारा है।।2।।

भजन

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–काली तेरी चोटी है.....

दुनिया में भगवन्तों के मंदिर अनेक हैं।
लेकिन जम्बूद्वीप की रचना केवल एक है।।
हस्तिनापुरी में उसका करो दर्शन, जम्बूद्वीप को नमन।। टेक.।।

विद्वानों के मुख से सुना जाता था।
मन्त्रों में जम्बूद्वीप नाम आता था।
उनके अर्थ पे न गया किसी का भी मन, जम्बूद्वीप को नमन।।1।।

एक बार ज्ञानमती माताजी के ध्यान में।
श्रवणबेलगोला बाहुबली जी के पास में।।
सूर्य चाँद जैसा इक प्रकाश पुंज आया था।
उसने जम्बूद्वीप का दृश्य दिखाया था।।
शास्त्रों में भी देखा वही, झूम उठा मन, जम्बूद्वीप को नमन।।2।।

देखो कैसा जुड़ा प्राचीन इतिहास है।
हस्तिनापुरी में हुए राजा श्रेयांस हैं।।
कोड़ाकोड़ी वर्ष पूर्व उन्हें स्वप्न हुआ था।
मेरू गिरि देख उन्हें बड़ा हर्ष हुआ था।।
प्रातःकाल ऋषभदेव आए थे महल में।
राजा दे आहार प्रथम बार खुश मन में।।
देवों ने भी आकर के लुटाये थे रतन, जम्बूद्वीप को नमन।।3।।

वही मेरुपर्वत साकार यहाँ हुआ है।
मानो नई कृति ने प्राचीनता को छुआ है।।
इसीलिए 'चंदना' यह धरती है चमन, जम्बूद्वीप को नमन।।4।।

भजन

-आर्यिका चन्दनामती

मेरु सुदर्शन पर करो मस्तकाभिषेक-2
जन्मकल्याणक का प्रतीक जिनवर का महाभिषेक।।
मस्तकाभिषेक।।टेक.।।

आदिनाथ से महावीर तक जितने जिनवर हैं।
सबके अभिषेकों से पावन सुमेरु गिरिवर है।।
क्षीर सिन्धु का निर्मल जल ले,
इन्द्र सहस कलशों में भरते।
एक साथ सौधर्म इंद्र ले, ढोरें कलश अनेक।।मस्तकाभिषेक.।।1।।

उसी मेरु की प्रतिकृति, धरती पर साकार बनी।
पांडुक आदि शिलाएँ, आगम के अनुसार बनीं।।
हस्तिनागपुर में यह रचना,
बनी विश्व में प्रथम अनुपमा।
ज्ञानमती माताजी की, प्रेरणा रही बस एक।।मस्तकाभिषेक।।2।।

पाँच वर्ष में इंतजार की, घड़ियाँ आती हैं।
महामहोत्सव में भक्ती से जनता आती है।।
जम्बूद्वीप देखकर सच में,
आनंदित होते सब मन में।
सभी 'चन्दनामती' प्रभू पर, ढोरें कलश अनेक।।मस्तकाभिषेक।।3।।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्रचक्रवर्ती
श्री शांतिसागर जी महाराज

आचार्य श्री शांतिसागर जी के
प्रथम पट्टाधीश एवं पूज्य गणिनी
श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षागुरु
आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी (राज.) में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर

भगवान पुष्पदंतनाथ जन्मभूमि काकंदी (देवरिया) उ.प्र. में निर्मित भव्य जिनमंदिर

978-93-87891-38-8